Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 6, JUNE - 2022 Publication Date: 15/06/2022

DOIs:10.2018/SS/202206001 --:-- Research Article

नई शिक्षा नीति के संदर्भ में सामाजिक विज्ञान विषय की चुनौतियां व सुझाव

डॉ. मीनाक्षी
सहायक आचार्य
श्रीमती कमला देवी गौरीदत्त मित्तल कन्या महाविद्यालय, सरदारशहर, चूरू
Email - tanwar.meenakshi11@gmail.com

सार संक्षेप : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नई शिक्षा नीति के लागू होने से पूर्व ही सभी स्कूली विषय की सम्बद्धता की जांच की जा रही है कि किस स्कूली विषय को महत्वपूर्ण माना जा रहा है, उस विषय का बालकों के भविष्य निर्धारण में कितनी सार्थकता है और किन विषयों को उपेक्षित विषयों की श्रेणी में रखा गया हैं, उनकी उपेक्षा का कारण क्या है आदि बिंदुओं की और ध्यान आकर्षित किया जा रहा है | क्योंकि बदलते समय और परिस्थितियों के साथ समाज और राष्ट्र की आवश्यकताएं और आकांक्षाएं भी बदलती रहती है । दुनिया की जरूरतों, समाज और राष्ट्र की अपेक्षाओं का प्रभाव शिक्षा के उद्देश्य, विषय-वस्तु और प्रक्रिया पर भी पड़ता है । गौर करें तो पिछले दो दशक में देश और दुनिया की आवश्यकताएं बहुत तेजी से बदली है । इसी कारण आज से 20 साल पहले शिक्षा व पाठ्यचर्या के स्वरूप और प्रक्रिया के संदर्भ में जो बातें प्रभावी और प्रासंगिक कही जा सकती थी, संभव है आज उतनी न हो । यही कारण है कि सामाजिक विज्ञान विषय को ज्यादा उपेक्षित विषयों की श्रेणी में रखा जाता है | नई शिक्षा नीति जहां बहुआयामी शिक्षण की बात करती है वहीं उसके अनुरूप निर्धारित विभिन्न कक्षावार स्तर पर सामना करने वाली चुनौतियों को उजागर करते हुए उसके निदान व सुझाव भी प्रस्तुत करती हैं कि किस प्रकार विभिन्न कक्षा स्तर पर शैक्षिक उद्देश्य, विषयवस्तु, शिक्षण विधियां, सहायक सामग्री, शिक्षक पेशेवर विकास तथा आकलन व मूल्यांकन किये जाए जिससे शैक्षिक व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन आ सके व बालक शैक्षिक गुणवत्ता की मुख्यधारा में शामिल हो सके |

कुंजी बिंदु : नई शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005, फाउंडेशन स्टेज,प्रिपरेटरी स्टेज, मिडिल स्टेज , सेकेंडरी स्टेज, उच्च माध्यमिक स्टेज , शिक्षक छात्र अनुपात, विशेष आवश्यकता वाले बालक आदि |

1. प्रस्तावना :

सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या में एक समय सूचना और जानकारी पर अधिक बल होता था । पाठ्य-पुस्तकों में अपने इतिहास, संस्कृति और विरासत से परिचय कराने के नाम पर सूचनाओं की जानकारी का बोझ बच्चों पर अधिक होता था । इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए प्रो यशपाल समिति ने अपनी सिफारिश 'शिक्षा बिना बोझ के ' में पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त भार के साथ सूचनाओं और जानकारी से उपजने वाले मानसिक दबाव की ओर भी इशारा किया था । पाठ्य-पुस्तक में अधिक सूचनाओं का भार एक ओर बच्चों में रटने की प्रवृति को बढ़ावा देती है और तो दूसरी ओर खोजे गए ज्ञान के दोहराव का । इसके परिणामस्वरूप बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा व रचनात्मक क्षमता पर प्रतिकूल असर पड़ता है । सूचना क्रांति के वर्तमान दौर में अब तथ्यों को याद करना उतना महत्वपूर्ण नहीं रह गया, जितना अपने आसपास फैले तथ्यों में से सही तथ्यों के चुनाव करना, चुने हुए तथ्यों का संदर्भ और परिस्थिति के अनुसार उपयोग करना, तथा उन तथ्यों का सही विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाल पाने की क्षमता का विकास करना है । सामाजिक विज्ञान शिक्षण का एक सिरा उसके विषय-वस्तु के स्वरूप से जुड़ता है तो दूसरा सिरा बच्चों के बारे में हमारी समझ और मान्यता से । विषय-वस्तु और बच्चों के बारे में हमारी मान्यताओं और विश्वास का सीधा प्रभाव सीखने-सिखाने की प्रक्रिया और कक्षा-कक्ष की संरचना पर पड़ता है । इसके लिए शिक्षकों को अपने दृष्टिकोण और दुनिया समाज को समझने के नजरिए को वस्तुनिष्ठ, साक्ष्य (सबूत) आधारित और तार्किक बनाने की जरूरत पड़ेगी । सामाजिक यथार्थ (विषमता, संघर्ष-धर्म, जाति, वर्ग) को नजरअंदाज कर कोई भी सामाजिक विज्ञान शिक्षण की पाठ्यचर्या प्रभावी नहीं हो सकती । दूसरी तरफ सामाजिक यथार्थ की अस्वीकारिता परोक्ष रूप बच्चों में गैरबराबरी की मानसिकता को मजबूत करती है । इसके कारण शिक्षा का व्यापक उद्देश्य सामाजिक बदलाव से नहीं जुड़ पाता और सामाजिक विज्ञान का पाठ्यक्रम कक्षा-कक्ष की परिधि तक सीमित रह जाता है । इसलिए शिक्षकों को अपने पूर्वाग्रह से मुक्त होकर सबूतों और तार्किक चिंतन के आधार पर सामाजिक मुद्दों पर कक्षा-कक्ष में खुल कर चर्चा

करनी चाहिए । इससे सामाजिक विज्ञान शिक्षण न केवल विभिन्न मुद्दों पर समझ कायम करने में मदद करेगा, बल्कि छात्रों को संवेदनशीलता, नैतिकता और संवैधानिक मूल्यों व सरोकारों से भी जोड़ेगा ।

2. सामाजिक विज्ञान विषय के संदर्भ में मानित धारणाएं-

सामाजिक विज्ञान की कक्षा में पाठ्य-पुस्तक में दिए गए पाठ को पढ़ने और उसपर आधारित प्रश्नों को याद करने पर ही अधिक समय बीतता है । इस कारण सामाजिक विज्ञान की घंटी में 'तू पढ़. तू पढ़' अप्रोच ज्यादा हावी रहता है। पाठ में आए मुद्दों पर विमर्श करने, अपने अनुभवों को साझा करने के मौके न के बराबर होते हैं । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-2005 के बाद पुस्तकों के स्वरूप में हुए बदलाव के बावजूद कमोबेश इस स्थिति कोई खास परिवर्तन दिखाई नहीं पड़ता । कई जगहों पर पाठ्य-पुस्तक की जगह कक्षाओं में कुंजी या गाइड ही शिक्षण का आधार बना हुआ है । इसके कारण आज भी सामाजिक-राजनीतिक जीवन और रहन-सहन से जुड़े मुद्दे कक्षा में चर्चा, विचार और अपने अनुभव को साझा करने के मौके उपलब्ध नहीं करा पाते । बालक में ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया की शुरुआत बच्चों के आसपास के परिवेश, स्थानीय इतिहास-संस्कृति के बुनियाद पर करनी चाहिए । पूर्व ज्ञान और अनुभव के आधार पर विषय-वस्तु की समझ पाठ्य-पुस्तक पर अत्यधिक निर्भरता को कम करेगी और समाज को बेहतर तरीके से समझने में मदद करेगी ।(Contextually embedded to contextually reduced)। बच्चों को कक्षा-कक्ष में अपने सामाजिक जानकारी और अनुभव को अलग-अलग स्रोतों से परखने, पक्ष-विपक्ष का विश्लेषण करने पाठ्य-पुस्तकों में कही गई बातों से अपने अनुभव की तुलना करने के मौके मिलने चाहिए । इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चों में विकासवादी और परिवर्तनकारी निष्कर्ष निकाल पाने की क्षमता विकसित की जा सकती है ।

3. सामाजिक विज्ञान विषय व कक्षा-कक्ष की चुनौतियां -

सामाजिक विज्ञान विषय में शामिल मुद्दों का संबंध समाज में मौजूद विभिन्न समुदाय के हितों, मान्यताओं और विश्वास से जुड़ा होता है, जिनके अनेक अनुभवों के साथ बच्चा स्कूल आता है । अतः स्वाभाविक हो जाता है कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण में ज्ञान की संरचना ऐसी हो जो बच्चों में सार्थक व परिवर्तनकारी अनुभव विकसित करने के मौके दे, जिसमें वे अपने पूर्व अनुभव और पहचान का उपयोग कर एक साझा दृष्टिकोण विकसित कर सके । इसलिए विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण और विवेचन के साथ उसको पढ़ाए जाने के ढंग को निर्धारित करना बहुत ही कठिन काम है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 और नई शिक्षा नीति-2020 इस बात पर बल देती है कि ज्ञान को पाठ्य-पुस्तक के संकीर्ण दायरे में नहीं देखनी चाहिए, बल्कि उससे आगे बढ़कर परिवेशगत अनुभव की भूमिका को भी स्वीकार करना चाहिए । शिक्षक के पास इस बात की स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह बच्चों को संवैधानिक मूल्य और सरोकार के दायरे में विषय-वस्तु और मुद्दों से संबंधित विभिन्न दृष्टिकोण को जानने समझने, उसका विश्लेषण और मूल्यांकन के मौके उपलब्ध कराए । सामाजिक विज्ञान शिक्षण की एक प्रमुख चुनौती परंपरागत शिक्षण तरीकों से जुड़ा हैं, जिसमें बच्चों के पास स्वयं कुछ करके सीखने के अवसर नहीं के बराबर होता है । पाठ्य-पुस्तक को ही ज्ञान का एक मात्र और अंतिम स्रोत मान कर चला जाता है । इसमें रोजमर्रा से जुड़े उदाहरणों का अभाव होता है । हालांकि इससे जुड़ी चिंताओं का बार-बार उल्लेख विभिन्न शिक्षा आयोगों और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के सिफारिशों में झलकता है, लेकिन इसे आज भी जमीनी स्तर पर पूरी तरह उतारा नहीं जा पाया है । इन सारी चुनौतियों के अलावा मूल्यांकन के तरीके का सीधा प्रभाव कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया पर पड़ता है । सामाजिक विज्ञान में आज भी आकलन और मूल्यांकन का सारा बल जानकारी और सूचनाओ पर आधारित होता है । इसमें बच्चों आलोचनात्मक चिंतन करने, टेक्स्ट का विश्लेषण करने, डेटा इकट्ठा करने और उससे निष्कर्ष निकालने आदि के मौके न के बराबर होते हैं । आकलन और मूल्यांकन को व्यापक और बहुआयामी बनाए बिना सामाजिक विज्ञान की कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया में यथोचित बदलाव करना मुश्किल है ।

4. कक्षानुसार विभिन्न विषय-वस्तु के चयन के आधार :

4 .1 फाउंडेशनल स्टेज

नई शिक्षा नीति-2020 के अनुसार 3-8 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए 5 वर्ष की फाउंडेशनल शिक्षा का प्रस्ताव रखा गया है । जिसमें प्रथम 3 वर्ष (3 से 6 आयु वर्ग) प्रारम्भिक देखभाल और शिक्षा की बुनियाद आंगनवाड़ी / बालवाटिका के माध्यम से सुनिश्चित किया जाना प्रस्तावित है । अंतिम दो वर्ष (6-8 आयु वर्ग) इसका उद्देश्य बालकों की प्रारम्भिक बाल्यावस्था में देखभाल के साथ भाषा और गणित की आरंभिक दक्षता को गतिविधि आधारित शिक्षण के द्वारा सीखने-सिखाने की बात की गई है ।

सुझाव -

इसके लिए बच्चों के परिवेश से जुड़ी कहानियाँ, कविताएं, गीत व खेल, रोल प्ले, ड्रॉइंग व पेंटिंग आधारित विषय-वस्तु का चयन किया जाए । पाठ्य-सामग्री ऐसी हो, जो बच्चों को आनंददायी माहौल में अपनी रचनात्मकता को प्रदर्शित करने के मौके दे । इस स्तर पर बच्चों में मौजूद व्यक्तिगत भिन्नता को स्वीकारने और उसमें निहित क्षमता को उभारने पर अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है । इस स्तर पर सामाजिक विज्ञान का कोई अलग से पाठ्यक्रम या पाठ्य-पुस्तक नहीं होगा, बल्कि प्रारम्भिक भाषा

और गणित के पाठ्यक्रम में ही इसे समेकित व एकीकृत किया जाना चाहिए । जिसमें स्थानीय भाषा और उनके जीवन से जुड़े अनुभवों को प्राथमिकता मिले, स्थानीय कला, साहित्य, खेलों को जगह मिले । समुदाय से प्राप्त ज्ञान और अनुभव को कक्षा और स्कूल में लाया जाए तथा उसके महत्व को समझा जाए ताकि बच्चो को अपनापन महसूस हो सके ।

शिक्षण विधि: इस चरण में शिक्षण विधि 'लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल, खोज और गतिविधि आधारित ' होगी, जिसमें बच्चों को सामाजिक कार्य, समस्या सुलझाने, शिष्टाचार, मानवीय संवेदना, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, अच्छे व्यवहार, समूह में कार्य करना, आपसी सहयोग, एक दूसरे का सम्मान आदि विकसित करने पर ध्यान केंद्रित होगा । शिक्षण विधि में ऐसी गतिविधियां शामिल की जानी चाहिए जिसमें परस्पर सहयोग, एक दूसरे पर विश्वास और सम्मान की भावना जागृत हो । बच्चों की रचनात्मक क्षमता को उभारने, अपनी बातों को रखने के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराए जाने की जरूरत है । प्रश्न करना सीखने की शुरुआती प्रक्रिया है, इसका अधिक से अधिक मौके के साथ बच्चों की गलतियों को भी सीखने के एक अंग के रूप में स्वीकार किए जाने की जरूरत है ।

आकलन और मूल्यांकन: इस स्तर पर बच्चों का आकलन और मूल्यांकन अवलोकन पर आधारित होना चाहिए। हर बच्चे का पोर्टफोलियो बनाकर सीखने में उसकी प्रगति, रुचि, पसंद-नापसंद, समूह में कार्य करने और एक दूसरे से उसके व्यवहार आदि को दर्ज किया जाना चाहिए । आकलन और मूल्यांकन को सीखने की प्रक्रिया के हिस्से के रूप में देखना बहुत जरूरी है न कि आकलन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर बच्चों को लेबलिंग करना। किसी भी प्रकार के लेवलिंग से बचना चाहिए और लिखित या टर्म एंड आकलन और मूल्यांकन का उपयोग इस स्तर पर नहीं किया जाना चाहिए ।

सहायक सामग्री: गतिविधियों की किताब, खिलौने, स्थानीय कविता, गीत और कहानियों की पुस्तक, पोस्टर, चार्ट, ऑडियो-विजुअल सामग्री, CWSN बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप सामग्री आदि ।

विषयों के बीच अंतर्संबंध: इस स्तर पर मुख्य रूप से दो विषय भाषा और गणित की प्रारंभिक दक्षताओं पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है और दोनों विषय से जुड़ी एक ही गतिविधियों की किताब हो सकती है, जिसके द्वारा सामाजिक व्यवहार, एक दूसरे के साथ सहयोग, समानता की भावना आदि को संबोधित किया जा सकता है ।

सहयोगी परिस्थिति: इस स्तर पर छात्र शिक्षक अनुपात (PTR) 15-1 से अधिक नहीं होना चाहिए । बच्चों को खुला माहौल मिले, जिसमें अपनी बातों को कह सकें, अपने घर परिवार और परिवेश के बारे में बात कर सकें । उन्हें खेलने, अपने आसपास की चीजों को अवलोकन कर बातें करने के अधिक से अधिक मौके उपलब्ध कराए जाने चाहिए ।

शिक्षक पेशेवर विकास: इस स्तर पर बच्चों के साथ काम करने के लिए शिक्षकों में अतिरिक्त धैर्य की आवश्यकता होती है । बाल मन को समझने और बच्चों की देखभाल करने वाले ऊर्जावान शिक्षकों की जरूरत होगी, जो बच्चों के साथ घुल मिल सके, उनके साथ खेल सके और किस्से कहानियों के माध्यम से बातें कर सकें । इस स्तर पर काम करने वाले शिक्षकों के लिए विशेष पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी । यहाँ यह ध्यान रखना जरूरी है कि इस उम्र में बालकों का संज्ञानात्मक विकास तेज गति से होता है, जिसमें भावनात्मक सहयोग और बाल सुलभ जिज्ञासा के प्रति सहानुभूति पूर्ण रवैये की जरूरत होती है । इस स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों में भावनात्मक सहयोग, संवेदनशील देखभाल और शिक्षण की क्षमता होना एक आवश्यक गुण माना जाना चाहिए ।

4.2 प्रीपेटरी स्टेज

नई शिक्षा नीति 2020 में 8 से 11 वर्ष के आयु के बच्चों के लिए तीन वर्षीय प्रीपेटरी स्टेज की अनुशंसा की गई है ।

विषय-वस्तु: इस स्टेज में सामाजिक विज्ञान का विषय-वस्तु परिवार, समाज, समुदाय, पर्यावरण के आपसी अंतर्संबंधों के आधार पर बना होना चाहिए । विषय वस्तु में स्थानीयता और पर्यावरण की समझ के साथ बच्चों के पूर्व अनुभव की जगह होने चाहिए । अपने आसपास के पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और संरक्षण का भाव उत्पन्न करने वाले मुद्दे व सामाजिक भेदभाव से जुड़ी बातों को भी शामिल किया जा सकता है । अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध हो, इस बात का ख्याल रखना जरूरी होगा ।

शिक्षण विधि: इस स्टेज में शिक्षण विधि गतिविधि, खोज और अनुभव के आधार पर अवधारणाओं को समझने वाली हो । बच्चों के साथ की जाने वाली गतिविधि में स्थानीयता का पुट हो ताकि अपने अनुभव को विभिन्न नजरीय से जांच पाएं । यह समझ पाए कि किसी भी चीज को देखने का दूसरा भी नजरिया होता है, दूसरे के विचार भी महत्वपूर्ण होते हैं और उनका भी सम्मान होना चाहिए।

आकलन और मूल्यांकन: इस स्टेज पर आकलन और मूल्यांकन की प्रक्रिया बच्चों में निहित क्षमता को पता लगाने वाला और कौशल आधारित होना चाहिए । जैसा कि NCF-2005 में भी कहा गया था कि 'जब तक परीक्षाएँ बच्चों की पाठ्य पुस्तकीय ज्ञान को याद करने की क्षमताओं का परीक्षण करती रहेंगी तब तक पाठ्यचर्या को सीखने की तरफ मोड़ने के सारे प्रयास विफल होते रहेंगे' । अतः सामाजिक विज्ञान विषय में इस स्तर पर आकलन 'यह समझ बनाए कि बच्चों ने क्या सीखा और उस ज्ञान को समस्या सुलझाने और व्यवहार मे लाने की उनकी क्षमता' कैसी है । इसके साथ ही आकलन 'यह भी जाँचने मे सक्षम होनी चाहिए कि विद्यार्थियों की सोचने की प्रक्रिया कैसी है तथा यह पता लगा पाए कि क्या शिक्षार्थी ने यह सीखा कि जानकारी कहाँ मिलती है, उस जानकारी का इस्तेमाल कैसे करते हैं और उसका विश्लेषण और मूल्यांकन कैसे करते हैं?

सहायक सामग्री: इस स्टेज में सीखने-सिखाने में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री विविधतापूर्ण होनी चाहिए । पाठ्य-पुस्तक की संरचना में वह लचीलापन और अवसर हो, जिसमें शिक्षकों के पास स्वतंत्रता हो कि बालकों के परिवेश और अनुभव से जुड़ी सामग्री को कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया का हिस्सा बना सके । लोक गीतों, कहानियों, फिल्म के अंश आदि का उपयोग किसी मुद्दे को समझने और विश्लेषण करने में किया जा सकता है । इस स्तर पर थीमैटिक अप्रोच को अपनाया जा सकता है, जिसमें थीम आधारित पाठ के अवधारणाओं को बढ़ते क्रम में देखा गया हो । इस स्तर पर बच्चों के साथ किए जाने वाली गतिविधियों की पुस्तिका बनाई जा सकती है । पाठ से ऑडियो-विजुअल सामग्री की सूची भी हो जिसका नियमित उपयोग बच्चों को सीखने में मदद करेगी ।

विषयों के बीच अंतर्संबंध: भाषा और गणित के विषय-वस्तु और प्रश्नों के निर्माण में अपने आसपास के परिवेश और पर्यावरण से जुड़े उदाहरण शामिल किए जाने चाहिए । अवलोकन, वर्गीकरण, तुलना करना आदि कई ऐसे कौशल हैं, जो गणित के जरिए सिखाए जा सकते हैं । भाषा के जरिए आपसी सहयोग, परस्पर व्यवहार, सही बात के निर्णय, संवेदनशीलता आदि गुणों को उभारा जाना चाहिए ।

सहयोगी परिस्थिति: शिक्षक को इस स्तर पर बच्चों को स्वयं करके सीखने के अधिक से अधिक मौके उपलब्ध कराने चाहिए । कक्षा-कक्ष का माहौल ऐसा हो, जिसमें बच्चे बिना डर भय के अपनी बात कह सकें । आपस में मिलजुलकर समस्या का समाधान करने और किसी हल पर पहुँचने के मौके हों । गतिविधि और खोज आधारित शिक्षण का माहौल उपलब्ध कराने के लिए कक्षा से बाहर निकल कर अपने आसपड़ोस दुनिया को जानने-समझने और उसपर बात करने के मौके दिए जाने चाहिए । इस स्तर पर शिक्षक-छात्र अनुपात (PTR-20) से अधिक नहीं होना चाहिए । विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए विशिष्ट सामग्री की व्यवस्था स्कूल कॉम्प्लेक्स स्तर पर होनी चाहिए, जैसे-ऑडियो बुक्स, मूक-बधिर के लिए विडिओ सामग्री या गतिविधियों की किताबें हो सकती है ।

शिक्षक पेशेवर विकास: इस स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों को सीखने और बच्चों से संबंधित परंपरागत मान्यताओं से मुक्त होने की जरूरत है । बच्चों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सेदार समझना और उन्हें अपने अनुभव और पूर्व ज्ञान के आधार पर नया रचने के मौके देना बच्चों की रचनात्मक क्षमता को उभारने के लिए जरूरी है । इस स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए समन्वित नजरिए की जरूरत है, जो विषय के सीमित दायरे से बाहर निकल कर बच्चों के अंतर्निहित क्षमता उभारने में सक्षम हो । अतः इस स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण का अधिकतर जोड़ बच्चे और सीखने से संबंधित बुनियादी सिद्धांतों को ध्यान में रखकर बुने जाने की जरूरत है ।

4.3 मिडिल स्टेज

नई शिक्षा नीति-2020 के अनुसार 11 से 14 वर्ष के आयु वर्गों के बच्चों के लिए 3 वर्षीय (कक्षा-6 से 8) लिए मिडिल स्टेज का प्रावधान रखा गया है ।

विषय-वस्तु- मिडल स्टेज में सामाजिक विज्ञान की विषय-वस्तु अपने परिवेश से आगे बढ़कर देश, समाज और दुनिया को प्रभावित करने वाले मुद्दे हो, जिसमें बालकों को यह समझ विकसित करने के मौके मिले कि आधुनिक राष्ट्र के रूप में भारत के उदय की प्रक्रिया क्या रही हैं । लोकतान्त्रिक संस्थाओं की कार्य-प्रक्रियाओं, समाज और राष्ट्र को सुचारु रूप से चलाने में उसकी भूमिका और एक आधुनिक राष्ट्र के नागरिक के रूप में अपने दायित्वों पर विचार करने वाले विषय-वस्तु को भी समावेश करना चाहिए । 21 वीं शताब्दी जहाँ दुनिया एक वैश्विक गाँव में परिणत हो गई है और हमारे दिन प्रतिदिन की गतिविधियों पर उनका असर पड़ता है, उन मुद्दों से भी बच्चों को परिचित कराने के मौके सामाजिक विज्ञान के विषय-वस्तु में शामिल किए जाने चाहिए । उच्च प्राथमिक कक्षा में मुद्दों को चयन करते हुए इन बातों का ध्यान भी रखा जाना चाहिए कि सूचना और प्रौद्योगिकी के इस युग में बच्चों में सही जानकारी का चुनाव करने; प्राप्त जानकारी को वर्गीकृत और सबूतों के आधार पर जाँचने-परखने के मौके होने चाहिए । इसके आधार सूचनाओं को विश्लेषित करने और उससे नए निष्कर्ष निकालने और परिकल्पना गढ़ने की क्षमता का विकास बच्चों में किया जा

सके । विषय-वस्तु में अपने आसपास मौजूद विविधता और राष्ट्रीय स्तर पर मौजूद बहुलता को भी स्थान मिलना चाहिए, जिससे बालकों में बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण को समझने, उसे स्वीकारने और उसका सम्मान करने की भावना जागृत हो । सामाजिक विज्ञान विषय में मिडल स्टेज पर विषय-वस्तु के चयन में इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि शामिल किए जाने वाले मुद्दों की वर्तमान समाज संदर्भ में प्रासंगिकता कितनी है और बच्चों में जीवन उपयोगी कौशलों के विकास में सक्षम है या नहीं ? जानकारियों के अधिक भार और गैर उपयोगी सूचनाओं से बचना चाहिए ।

शिक्षण विधि - यह ऐसी अवस्था है, जिसमें बच्चे तार्किक और अमूर्त चिंतन करने लगते हैं । कहे हुए बात के पीछे के मायने और निहितार्थों को जानने समझने लगते है । अतः इस स्टेज में हमारी शिक्षण विधि बच्चों में मौजूद क्षमता को निखारने और आकार देने वाली होनी चाहिए । हमारी कक्षा-कक्ष की शिक्षण प्रक्रिया में इस बात पर अधिक बल होना चाहिए कि हम सही और गलत की पहचान कैसे करते हैं उसका निर्णय कैसे लेते हैं । अतः पाठ्य-पुस्तक से आगे बढ़कर अन्य स्रोतों का भी शिक्षण विधि में इस्तेमाल महत्वपूर्ण हो जाता है । जानकारी के विविध स्रोतों (समाचारपत्र, फिल्म, कहानी आदि) के साथ स्थानीय ज्ञान का भी समावेश हो, ताकि बच्चों में यह समझ कायम हो कि समाज में किसी मुद्दे पर परस्पर विरोधी राय, मान्यताएं और विश्वास मौजूद होते हैं और उसके पीछे कारणों को जानना और उस पर संवाद करना प्रगतिशील समाज का लक्षण है ।

आकलन व मूल्यांकन- सामाजिक विज्ञान में इस स्तर पर आकलन और मूल्यांकन का मुख्य बल बच्चों में मौजूद अंतर्निहित क्षमताओं और सिखाए गए कौशलों को उजागर करने वाला होना चाहिए । इसलिए मिडल स्तर पर सामाजिक विज्ञान में आकलन करते हुए इन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि विषय-वस्तु को बच्चे पढ़-समझ कर व्याख्या करते हैं या नहीं । आवश्यक जानकारी जुटाकर परिकल्पना करने और समस्या का समाधान करने की क्षमता की भी जांच हो । साक्ष्यों के आधार पर दिए गए तथ्यों को विश्लेषित करने और उनमें कमियाँ ढूँढने, चित्र, मानचित्र, डेटा आदि से निष्कर्ष निकालने और उसके उपयोग से अपनी बात को रखने की क्षमता को भी आकलन का आधार बनाना चाहिए । नई शिक्षा नीति जिस बहुआयामी मूल्यांकन की बात करती है, उसे धरातल पर उतारने के लिए आकलन के विविध तरीकों का उपयोग आवश्यक हो जाता है ।

सहायक सामग्री - सामाजिक विज्ञान के विषय-वस्तु और मुद्दे भौगोलिक परिवेश, सामाजिक-राजनीतिक संस्थाओं के कार्य-व्यवहार, मानव समाज के इतिहास से जुड़ा होता है । सामाजिक विज्ञान की पाठ्य-पुस्तक को कक्षा-कक्ष में एक संदर्भ सामग्री के रूप में देखा जाना चाहिए । कक्षा-कक्ष में चर्चा किए जाने वाले मुद्दों से संबंधित समाचार (समाचारपत्र), फिल्म के अंश, कहानी, आलेख, डॉक्यूमेंटरी आदि का उपयोग इस स्तर पर बखूबी किया जा सकता है, इसके लिए इसे पाठयोजना के साथ एकीकृत करने की जरूरत पड़ेगी । अन्यथा यह सिर्फ वातावरण निर्माण की प्रक्रिया भर रह जाएगी ।

विषयों के साथ अंतर्संबंध- सामाजिक विज्ञान का विज्ञान, गणित और भाषा के साथ सम्बन्ध कई स्तरों पर देखे जा सकते हैं । विज्ञान से अर्जित कौशल, (जैसे-अवलोकन, वर्गीकरण, अनुमान लगाना) का उपयोग सामाजिक विज्ञान के मुद्दे को समझने और विश्लेषित करने में किया जा सकता है । वैज्ञानिक चिंतन या वैज्ञानिक सोच का तरीका हमें बताता है कि कोई भी धारणा या विचार बनाने से पूर्व ठोस प्रमाण / पुख्ता सबूत की जरूरत पड़ती है। समाज में मौजूद समानता-असमानता के तत्वों को जानने-समझने में इस वैज्ञानिक अवधारणा का उपयोग कक्षा-कक्ष में अवश्य की जानी चाहिए । इसी प्रकार गणित में सीखी गई अवधारणा सामाजिक विज्ञान के विषयों को विश्लेषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । मैप को समझने के लिए, दिशा, स्केल आदि की अवधारणा को जानने समझने; भौगोलिक परिघटना और डेटा को विश्लेषित करने; सामाजिक मुद्दों से संबंधित सर्वे का रेखीय प्रस्तुति और विश्लेषण करने जैसे कई क्षेत्र हैं, जहाँ गणितीय कौशलों का उपयोग किया जाता है ।

सहयोगी परिस्थिति- शिक्षण प्रक्रिया को शिक्षक और बच्चों के बीच सीखने के अवसर और संवाद के रूप में देखा जाना चाहिए, जो एक लोकतांत्रिक संस्कृति का विकास के लिए उपयोगी साबित होगी । सीखने की प्रक्रिया को भागीदारी पूर्ण बनाने के लिए सूचनाओं के आदान-प्रदान से हटकर वाद-विवाद और परिचर्चा को एक प्रमुख उपक्रम माना जाना चाहिए । शिक्षण विधि में बच्चों के सामाजिक अनुभव, ज्ञान, मान्यता और विश्वास को रखने और उसपर खुलकर परिचर्चा के मौके हो, जिससे सामाजिक सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर और सामाजिक यथार्थ से रूबरू होने के मौका मिले ।

शिक्षक पेशेवर विकास: सामाजिक विज्ञान के प्रभावी शिक्षण के लिए कुशल, खुले विचारों वाला आलोचनात्मक चिंतन से युक्त शिक्षकों की आवश्यकता होगी । शिक्षक का मुख्य दायित्व बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में भागीदार बनाने की होनी चाहिए, जिसमें वह बच्चों के सामने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करें, जिसमें सिखाना प्रभावी हो सके। ऐसे शिक्षकों के लिए न केवल सेवापूर्व प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में बदलाव की आवश्यकता है, बल्कि सेवाकालीन प्रशिक्षण पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए ।

4.4 सेकेंडरी स्टेज

नई शिक्षा नीति 2020 में 4 वर्षीय सेकेंडरी स्टेज को दो फेजों में देखा गया है । पहला फेज कक्षा-9 और 10 का है और दूसरा 11 और 12 का । इस स्तर पर 'आलोचनात्मक सोच' 'जीवन आकांक्षाओं पर अधिक ध्यान' के साथ 'विषयों के चुनाव में लचीलापन' की ओर भी संकेत किया गया है ।

सेकेंडरी स्टेज (माध्यमिक स्तर): (कक्षा-9 और 10)

विषय-वस्तु- कक्षा 9 और 10 की विषय-वस्तु में उन मुद्दों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जो बच्चों को अपने आसपास के परिवेश और समाज से आगे बढ़कर देश-दुनिया को प्रभावित करने वाले मुद्दों और सरोकारों से जोड़ता हो।

शिक्षण विधि: माध्यमिक स्तर पर इस तरह की शिक्षण विधि अपनाई जानी चाहिए, जिसमें बच्चों को आपस में अन्तर्क्रिया और परिचर्चा द्वारा ज्ञान निर्माण और कौशल अर्जित करने के मौके उपलब्ध हो सके । छात्रों को विषय-वस्तु से जुड़े टेक्स्ट का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकालने और अपनी बात को तथ्यों व साक्ष्यों के आधार पर कहने के कौशलों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए ।

आकलन और मूल्यांकन: सेकेंडरी स्टेज पर बोर्ड परीक्षाओं का स्वरूप व झुकाव अधिकतर सूचनाओं और जानकारी आधारित प्रश्नों पर होता है । समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण आधारित क्षमता को जाँचने वाले प्रश्नों पर ध्यान न देने की वजह से कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया भी प्रभावित होती है । इसके परिणामस्वरूप परीक्षाएं छात्रों की समग्र क्षमताओं को जाँचने में असफल रहती है, बल्कि जीवन उपयोगी कौशलों को उभारने में बाधक रहती है । इसी समस्या को इंगित करते हुए नई शिक्षा नीति 2020 सतत व बहुआयामी मूल्यांकन अपनाने पर बल देती है।

सहायक सामग्री: पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त कक्षा-कक्ष में चर्चा किए जाने वाले मुद्दों से संबंधित समाचार (समाचारपत्र),फिल्म के अंश, कहानी, आलेख, डॉक्यूमेंटरी, कार्टून आदि का उपयोग माध्यमिक स्तर पर बखूबी किया जा सकता है, इसके लिए इसे पाठयोजना के साथ एकीकृत करने की जरूरत पड़ेगी ।

विषयों के साथ अंतर्संबंध - वैज्ञानिक चिंतन या वैज्ञानिक सोच का तरीका हमें बताता है कि कोई भी धारणा या विचार बनाने से पूर्व ठोस प्रमाण / पुख्ता सबूत की जरूरत पड़ती है। समाज में मौजूद समानता-असमानता के तत्वों को जानने-समझने में इस वैज्ञानिक अवधारणा का उपयोग कक्षा-कक्ष में अवश्य की जानी चाहिए ।

सहयोगी परिस्थिति- विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान जैसे बहुविषयी (multidisciplinary) अवधारणा की समझ कायम करने के लिए खुले विचारों वाला प्रशिक्षित पेशेवर शिक्षक की अपेक्षा रखती है । माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के विविध डोमेन का आपसी संबंध को समेकित रूप से देखे बिना इससे संबंधित मुद्दों पर समग्र समझ कायम करना मुश्किल होगा ।

शिक्षक पेशेवर विकास: सामाजिक विज्ञान के प्रभावी शिक्षण के लिए कुशल, खुले विचारों वाला आलोचनात्मक चिंतन से युक्त शिक्षकों की आवश्यकता होगी । माध्यमिक स्तर पर विषय-विशेषज्ञ शिक्षकों में विषय से जुड़े अन्य डोमेन की न्यूनतम समझ होना अनिवार्य है । साथ ही सामाजिक विज्ञान शिक्षण को समेकित (integrated approach) दृष्टिकोण से देखने की जरूरत है । क्योंकि सामाजिक विज्ञान से जुड़े मुद्दों का संबंध अपने स्वभाव में आपस में जुड़ा होता है । किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले समुदाय का क्रियाकलाप और व्यवहार को उस क्षेत्र के भूगोल, इतिहास और संस्कृति को समझे बिना जाना नहीं जा सकता । अतः शिक्षक के पेशेवर विकास के लिए सेवा पूर्व और सेवा के दौरान प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अंतर विषयक दृष्टिकोण को प्रमुखता देने की जरूरत है।

सहायक सामग्री- सामाजिक विज्ञान के प्रभावी शिक्षण के लिए ग्लोब, ऐतिहासिक, भौगोलिक व राजनैतिक मानचित्र, ऑडियो विजुअल सामग्री जैसे मूलभूत संसाधन का कक्षा-कक्ष में उपलब्धता के साथ शिक्षण में उपयोग आवश्यक है ।

उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा-11 और 12)

नई शिक्षा नीति 2020 माध्यमिक स्तर को चार वर्ष के विस्तारित चरण में देखती है, जिसका अंतिम दो वर्ष विषयगत दक्षता आधारित पाठ्यक्रम होगी । उच्च माध्यमिक स्तर स्कूली शिक्षा से महाविद्यालयी शिक्षा की ओर संक्रमण का फेस होता है । उच्च माध्यमिक स्तर के बाद छात्रों के समक्ष भावी जीवन को आकार देने के कई विकल्प खुल जाते हैं । अपनी रुचियों और दक्षता के अनुरूप वे चाहे तो वे रोजगारपरक पाठ्यक्रम को चुन सकते हैं या विषय से संबंधित विशेषज्ञता हासिल करने वाले कोर्स ।

संदर्भ सूची :

1. नई शिक्षा नीति ड्राफ्ट, 2020
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
3. सामाजिक विज्ञान शिक्षण, राष्ट्रीय फोकस पेपर - 2005, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
4. दस वर्षीय करिकुलम फ्रेमवर्क, 1975, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
5. विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2000, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
6. स्कूली सामाजिक विज्ञान के विवादित क्षेत्र(आलेख), प्रो. पूनम बत्रा, लर्निंग कर्व, मई-2011, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, बैंगलोर
7. सामाजिक अध्ययन में परेशान करने वाले सवाल (आलेख), हृदयकान्त दीवान, लर्निंग कर्व, मई-2011, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, बैंगलोर
8. लोकतंत्र के लिए शिक्षा- स्कूलों में सामाजिक विज्ञान शिक्षा की प्रासंगिकता (आलेख), अंजलि नरोन्हा, लर्निंग कर्व, मई-2011, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन, बैंगलोर
9. The role of School in Society, (Page-53-57) Philosophical Issues in Education: An Introduction-1989, Cornel. M. Hamm, RoutledgeFalmer, London and New York.
10. इतिहास क्यों पढ़ें? (आलेख); पीटर एन. स्टर्न, शिक्षा विमर्श, नवंबर-दिसंबर-2008, दिगंतर, जयपुर
11. शिक्षा और राष्ट्र विकास, कोठारी कमीशन -1964-66, नई दिल्ली
12. सामाजिक अध्ययन शिक्षण एक प्रयोग, एकलव्य, भोपाल, जनवरी 1994.